IMPACT FACTOR 5.473(SJIF)
UPA NATIONAL E-JOURNAL
Interdisciplinary Peer-Reviewed Journal
ISSN 2455-4375

डॉ. भीमराव आम्बेडकर जी का शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान

डॉ. अल्पना वैद्य
सहायक प्राध्यापक
राज्यशास्त्र विभाग
हिस्लॉप कॉलेज, सिव्हिल लाइन्स नागपूर
Email ID - alpana.vaidya@yahoo.in

Keywords : सामाजिक परिवर्तन , मानवता, नैतिकता, व्यक्तित्व विकास, समानता, सामाजिक न्याय

सार संक्षेप (Abstract) :

'शिक्षा' को बदलाव लाने वाला, एक आंदोलन मानने वाले आम्बेडकर जी ने अपने शैक्षिक दर्शन से समाज में प्रचलित अनैतिकता, रूढ़िवादिता, संकीर्णता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, शोषण आदि कुप्रवृत्तियों को दूर करने का प्रयास किया। भारत की वर्तमान परिस्थिति में डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर जी के शैक्षिक विचार अत्यंत प्रासंगिक है। उनके शिक्षा दर्शन में मानवता, बौद्धिकता, नैतिकता, व्यक्ति व्यक्तित्व विकास, समानता, सामाजिक न्याय और सामाजिक परिवर्तन को मूलभूत आधार माना गया है। वे शिक्षा के माध्यम से मानवीय गरिमा, निर्भयता, न्याय, सामाजिक स्वतन्त्रता, आत्मसम्मान, व्यवहार परिवर्तन, समानता, सद्भावना, रूढ़िवादित का अंत, क्रियाशील व सृजनात्मक मस्तिष्क का विकास तथा एक सुसंस्कृत भारत का निर्माण करना चाहते थे।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर का शिक्षा दर्शन :

डॉ. आम्बेडकर एक महान शिक्षा शास्त्री, अर्थशास्त्री, दार्शनिक, समाज सुधारक, न्यायविद, संगठनकर्ता व दलित आंदोलन के प्रणेता माने जाने वाले महान व्यक्ति थे। वे मूलतः शिक्षा क्षेत्र के एक जागरूक साधक थे। बाबा साहब आम्बेडकर जी ने स्वयं अपने जीवन में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई तरह की परेशानियाँ उठायी थी तत्कालीन जटिल सामाजिक व्यवस्था में जन्म लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना अत्यंत दुर्लभ था। परंतु आम्बेडकर जी एक अछूत परिवार में जन्म लेकर सामाजिक प्रताड़ना को सहते हुए भी उच्चतम कोटि की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अपनी जीवन में प्राप्त दुर्लभ उपलब्धियों का श्रेय भी 'शिक्षा' को दिया है। उन्होंने संपूर्ण विकास के लिए शिक्षा को एक अमोल अस्त्र माना और इसे मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग बताया। डॉ. आम्बेडकर जी कहते थे कि "शिक्षा वह है जो व्यक्ति को निडर बनाए, एकता का पाठ पढ़ाए, लोगों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करें, संघर्ष की सीख दें और आजादी के लिए लड़ना सिखाएं।"

आम्बेडकर जी का मानना था कि शिक्षा से वंचित मनुष्य, पशु तुल्य हो जाता है। शिक्षा, व्यक्ति के सामाजिक और नैतिक गुणों को जागृत करती है। वे सदाचार पर जोर देते थे। वे मानवीय गुणों व सदाचार पर आधारित शिक्षा पर जोर देते थे। आम्बेडकर जी ने शिक्षा को स्पष्ट करते हुए कहा था कि जो शिक्षा योग्य न बनाये, नैतिकता का बोध न कराए, समानता न सिखाये वह शिक्षा नहीं है। बल्कि शिक्षा वह है जो मनुष्य के हित का संरक्षण करती हो तथा जो शिक्षा समाज को समानता, भूखे को रोटी और ज्ञान को संतुष्टि (तृप्ति) दे वही सच्ची शिक्षा है।

शिक्षा की अनिवार्यता व राष्ट्रीयकरण पर जोर :

सन् 1927 बॉम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिल में बजट पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बाबासाहेब कहते हैं कि "शिक्षा ऐसी वस्तु है जो प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचनी चाहिए। शिक्षा सस्ती से सस्ती हो ताकि

निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी शिक्षा ग्रहण कर सकें।" राष्ट्र प्रेम जागरण में शिक्षा को विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करना चाहिए इस सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए बाबासाहेब कहते हैं "मेरी राय में ,आज की सबसे अधिक मूल आवश्यकता इस बात की है की जन समुदायों में एक सामान्य राष्ट्रीयता की भावना पैदा की जाए ,यह भावना नहीं की वे प्रथम हिन्दू , मुस्लिम, सिंधी या कर्नाटकी हैं बल्कि यह की प्रथम तथा अन्ततः भारतीय हैं।"

पाठ्यक्रम में 'वैज्ञानिकता व मानवीयता' के समन्वय पर जोर

शिक्षा के पाठ्यक्रम के संबंध में उनका मानना था कि "पाठ्यक्रम में पढ़ना, लिखना और गणित जैसे सिद्धांत को ध्यान में रखकर ही विषयों का चयन नहीं करना चाहिए।" बाबा साहब का मानना था कि– पाठ्यक्रम में विज्ञान, तकनीकी, विकास और रोजगार जैसे विषयों को भी स्थान देना चाहिए। साथ ही इन सब विषयों के साथ व्यवहार की शिक्ष, आचरण की शिक्षा, संगठन की शिक्षा एवं मानवता को महत्व दिलाने वाले विषय रखे जाने चाहिए।

डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य जनजागृति होना चाहिए उनके अनुसार गणित,विज्ञान ,सामाजिक विज्ञान व आचरण की शिक्षा को मुख्यतः पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिए। खेलकूद व्यायाम व जीविकोपार्जन की शिक्षा को भी पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए अपने इन्हीं विचारों को साकार करने के लिए उन्होंने 1945 में पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी की स्थापना की। अम्बेडकर चाहते थे की शिक्षा कालानुरूप होनी चाहिए व पाठ्यक्रम मानव सर्जना को दिशा देने वाला होना चाहिए । डॉ डी आर जाटव ने कहा "मानव के स्वरुप में अन्तर्निहित अनेक सामर्थ्यों में डॉ अम्बेडकर की अटूट आस्था थी उनके मतानुसार आदमी और जगत का कोई पूर्व निर्धारित लक्ष्य नहीं है और चुनाव एवं स्वतन्त्रता की शक्ति ने हमें भावी जीवन की आशा प्रदान की है। मनुष्य प्रकृति का विलक्षण प्रतिनिधि है जिसमें सर्जनात्मकता की भावना अपार मात्रा में अन्तर्निहित है। "

स्त्री– शिक्षा का समर्थन :

डॉ. आम्बेडकर जी पुरुषों की अपेक्षा स्त्री–शिक्षा पर अधिक जोर देते थे उनका मानना था कि एक स्त्री के शिक्षित होने से एक संपूर्ण परिवार शिक्षित हो जाता है परंतु एक पुरुष के शिक्षित होने का अर्थ है अकेले उस व्यक्ति विशेष का शिक्षित होना। स्त्री शिक्षा से एक संपूर्ण समाज सुशिक्षित और सुसंस्कृत हो जाता है। इसीलिए आम्बेडकर जी का कहना था कि लड़कों की शिक्षा के साथ–साथ लड़कियों को भी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

व्यवहारिक शिक्षा पर जोर :

डॉ. आम्बेडकर जी तत्कालीन परीक्षा प्रणाली से क्षुब्ध थे। वे कहते थे कि "दूर्षित परीक्षा प्रणाली ने विद्यार्थियों के प्रयासों को कुंठित कर दिया है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों के दिमाग में केवल सिद्धांत और आंकड़े ही न डाले, जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध होता हो, जिसमें केवल याद करने की दिमागी कसरत ही न करनी पड़ती हो। शिक्षा विद्यार्थी को कठिनाईयों का अनुभव कराए और साथ ही सत्य तक पहुँचाने का मार्ग तथा जीवन मूल्य भी बताए।" इससे आम्बेडकर जी की शिक्षा सुधार की स्पष्ट रूपरेखा प्रकट होती है। शिक्षा प्राप्त करने का वास्तविक अर्थ तब है जब व्यक्ति अपने समाज के विकास के लिए अपनी द्वारा अर्जित धन का बीसवां हिस्सा अर्थात् 5 प्रतिशत समाज को समर्पित कर दें तभी समाज का उत्थान संभव हो सकता है।

शिक्षा का उद्देष्य/अनिवार्यता :

डॉ. भीमराव आम्बेडकर जी ने एक प्रगतिशील समाज की स्थापना के लिए, देश के शोषित, निर्धन एवं वंचित समाज को गतिशील समाज का त्रिसूत्र दिया था। शिक्षा, संगठन और संघर्ष। उनका मानना था कि शिक्षित होकर ही संगठन बनाया जा सकता है और तभी संघर्ष कर सकते है अर्थात् संगठित होने और न्याययुक्त संघर्ष करने के लिए प्रथम सीढ़ी 'शिक्षा' है। उनका मानना था कि शिक्षा से भौतिक जगत में गतिशील होने की क्षमता प्राप्त होने के साथ साथ बौद्धिक क्षमता का भी विकास होता

है। जिन सामाजिक परिस्थियों में आम्बेडकर जी ने संघर्ष किया जिन्होंने उन्हें एक विवकेशील व चिंतनशील मानव बनाया उन्हीं के आधार पर उन्होंने शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों की व्याख्या की जैसे– मानसिक और बौद्धिक विकास, तार्किक और वैज्ञानिकता का विकास, सामाजिक विकास, व्यवसायिक विकास, नैतिक मूल्यों का विकास, संकीर्णता व रूढ़िवाद से मुक्ति, राष्ट्रीयता का विकास आदि। वे बौद्धिक व मानसिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य मानते थे उनका मानना था की इसी से वैज्ञानिकता और विवेक जाग्रत हो सकता है। उनके अनुसार "समाज में शिक्षा ही समानता ला सकती है जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है तो उसमें विवेक –सोच की शक्ति पैदा हो जाती है जिससे अच्छे बुरे का ज्ञान और निर्णय लेने की क्षमता आ जाती है। " वे शिक्षा को सङ्कीर्णता से मुक्ति का साधन बनाना चाहते थे इस सन्दर्भ में डॉ डी आर जाटव कहते हैं कि "डॉ अम्बेडकर स्वयं एक ऐसे विद्रोही विद्वान थे जो आदमी को पुरोहितवाद, धर्मान्धता, कट्टरता, साम्प्रदायिकता, वर्णव्यस्था, जातिवाद, परलोकवाद, ईश्वरवाद, नरक–स्वर्गवाद, छुआछूत आदि से मुक्त करना चाहते थे। "

शिक्षा दर्शन के मूल भूत आधार :

अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा का प्रमुख सन्देश मानव सेवा होना चाहिए इससे मानव मानव के बीच एकता के विकास को बल मिलना चाहिए। शिक्षा अव्यवहारिक धारणाओं को कुचलने में इतनी समर्थ होनी चाहिए जिससे दोषयुक्त व्यवहारों में परिवर्तन हो सके। शिक्षा को नवीन चुनौती से लड़ने की योग्यता देने की क्षमता हासिल करनी चाहिए जिससे सामाजिक परिवर्तन हो सके। शिक्षा के द्वारा न्याय व समानता के सिद्धान्त को भी पोषण मिलना चाहिए। शिक्षार्थी में सदगुण धारण करने की शक्ति का विकास होना चाहिऐ। शिक्षा वर्णाश्रम व अज्ञान की दीवार का भेदन कर सके ऐसा मानवता को प्रबुद्ध करने का साधन होना चाहिए। शिक्षा वह जो मनुष्य के स्वयं की भूमिका के महत्त्व को समझाने में समर्थ हो। शिक्षा बुद्धि के स्वतन्त्रविकास का कारण बने । शिक्षा का स्वरुप सरल होना चाहिए। यह छल, प्रपञ्च से बचाए। मानवता स्थापन में सहयोगी करने वाली होनी चाहिए। शिक्षा वास्तविक जीवन पर आधारित होना चाहिए जिससे नैतिकता, सामाजिक, राजनैतिक, और सौन्दर्यात्मकता के सही मानदण्ड विद्यार्थी में विकसित हो सकें। शिक्षा को रूढ़ियों , अन्धविश्वास को कुचलने का सबल आधार होना चाहिए । शिक्षा वास्तविक समाजोपयोगी मूल्यों के सृजन व स्थापन में सहयोगी बने जिससे मित्रता, सहयोग, समानता, और सहभागिता के सम्बन्ध बन पाएं और जाति,सम्प्रदाय, आदि के बन्धन का ह्रास हो सके।

यथार्थवादी शिक्षण विधियों पर जोर :

वे ऐसी शिक्षण विधियों का विकास चाहते थे जो स्वतन्त्र चिन्तन की दिशा में सहायक हो सके। अनुभव द्वारा सीखना , तर्क द्वारा सीखना , वाद विवाद द्वारा सीखने को वे उचित समझते थे वे अपने समय में प्रचलित शिक्षण विधियों को दोषपूर्ण समझते थे उनके अनुसार शिक्षण विधियाँ प्रेरक शक्ति से युक्त होना चाहिए। वे शिक्षक को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं शिक्षक यथार्थवादी , विस्तृत व्यापक दृष्टिकोण का स्वामी होना चाहिए , समाज की रूढ़ियों को तोड़ने वाला होना चाहिए । उनके इस सम्बन्ध के विचारों को डॉ डी आर जाटव के अम्बेडकर का धर्म दर्शन में देखा जा सकता है उनके अनुसार " आदमी को पुरोहितवाद, धर्मान्धता, कट्टरता, साम्प्रदायिकता, वर्णव्यस्था, जातिवाद, परलोकवाद, ईश्वरवाद, नरक–स्वर्गवाद, छुआछूत आदि से मुक्त करना चाहते थे।वह चाहते थे आदमी आदमी के बीच सम्यक सम्बन्ध स्थापित हों और एक समतावादी समाज की नीव दृढ हो।" वे मानते हैं कि शिक्षार्थी अपने आप में सामंजस्य का गुण विकसित करें वे मानते हैं कि सामंजस्यता व सामजिक दृढ़ता दोनों ही महत्वपूर्ण हैं लेकिन प्रगति और न्याय के आधारों को छिन्न भिन्न नहीं किया जाना चाहिए और सामान्य मूल्यों के प्रति अटूट आस्था रखनी चाहिए टी ० एच ० ग्रीन ने Lectures on The Principles of Political obligation में भी कहा "वास्तविक समाज उन लोगों का है जिनमें एक सामान्य भावना है और सामान्य मूल्यों के प्रति अटूट आस्था है।" वे समानता व सजगता के पक्षधर, आदर्श चरित्र, धर्म के प्रति जागरूक थे। शिक्षा के

लिए उचित धनराशि का व्यय राष्ट्र के पोषण की आधार शिला मानते थे। उन्होंने राष्ट्र के सजग प्रहरी की भूमिका जीवन पर्यन्त निर्वाहित की।

अनुसूचित वर्ग की शिक्षा :

अनुसूचित वर्ग के प्रति बाबा साहब अंबेडकर काफी चिंतित थे इसीलिए वे चाहते थे कि अनुसूचित वर्ग शिक्षा प्राप्त करें और पढ़ लिख कर अपनी मुक्ति और शोषण का रास्ता प्रशस्त करें वह चाहते थे कि अनुसूचित वर्ग विचार विमर्श करें तार्किक बुद्धि का प्रयोग करें इस तरह से सामाजिक विषमता और सामाजिक दास्तां की जंजीरों को तोड़ कर समाज में उन्नति कर सकें डॉक्टर भीमराव अंबेडकर अनुसूचित जाति जनजाति के उद्धार में शिक्षा को एक बड़ा स्रोत मानते थे उनका मानना था कि शिक्षा ही अस्त्र है जो उन्हें गरीबी से बाहर निकाल कर स्वाभिमान और सम्मान को दिला सकेगा ।

आम्बेडकर जी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता (सार्थकता) :

भारतीय परिप्रेक्ष्य में, वर्तमान में जिस व्यावहारिक दर्शन की आवश्यकता पारिलक्षित हो रही है उसके बीज डॉ भीम राव अम्बेडकर के शिक्षा के दर्शन में दिखते हैं जो कि प्रस्फुटित हो सकते हैं। डॉ. आम्बेडकर जी के विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था, छात्रों व अध्यापकों सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे शिक्षा को समाज के उत्थान, प्रगति व विकास का एकमात्र साधन मानते थे। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति एवं समाज दोनों परिप्रेक्ष्य में बतलाया जिससे नवीन समाज का निर्माण हो। भारत की वर्तमान परिस्थिति में उनका शैक्षिक दर्शन अत्यंत प्रासंगिक साबित होता है। जो मल्य वर्धक होने के साथ रोजगार परक शिक्षा की भी बात कहता है। शिक्षा से वह एक शोषण मुक्त भारत का निर्माण करना चाहते थे जो कि आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

प्रगतिवादी शिक्षा का समर्थन :

डॉ. आम्बेडकर जी उस समय की तत्कालीन शिक्षा पद्धति की उद्देश्य विहीनता से अत्यंत निराश थे। वे चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति की बौद्धिक सोच में, विचारधारा में बदलाव आए। शिक्षा का लक्ष्य पाखंड, भय, अंधविश्वास, स्वार्थ, उत्पीड़न और आतंक से मुक्ति दिलाना होना चाहिए।

निष्कर्ष :

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आम्बेडकर जी के शैक्षिक विचारों से स्पष्ट है कि सभ्यता और संस्कृति का भवन शिक्षा के स्तंभ पर ही बनता है। यह मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करती है। शिक्षा ही देश–प्रेम, बंधुता, एकता एवं विवके को जन्म देती है। इस प्रकार आम्बेडकर जी शिक्षा को वंचित शोषित समाज के कल्याण और प्रगति का साधन मानते थे वे शिक्षा को सभी के लिए अनिवार्य व आवश्यक मानते थे। आज भारत देश को, उनके शैक्षिक दर्शन को अपनाना अत्यंत आवश्यक है तभी हम विश्व पटल पर अपना नाम अंकित कर सकेंगें।

संदर्भ ग्रंथ (References):

- सोनटक्के यशवंत, बाबासोहब डॉ. आम्बेडकर के विचार, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली।
- आजाद रामगोपाल, राजसत्ता पर केन्द्रित डॉ. आम्बेडकर के भाषण, क्षमता प्रकाशन लश्करीबाग, नागपुर।
- भटनागर, डॉ. राजेन्द्र मोहन, डॉ. आम्बेडकरः जीवन और दर्शन किताब घर, नई दिल्ली।
- Kumar, Vivek (2005). Situating Dalits in Indian Society.Sociological Bulletin, 54(3), Sep.-Dec. p. 514.
- Naik C. D. (2003), Thoughts and Philosophy of Dr. B.R. Ambedkar, New Delhi: Sarup & Sons.
- Bharathi K. S. (1998), The Political Thought of Ambedkar (Encyclopaedia of Eminent Thinkers), New Delhi: Concept Publishing Company.

- Dr. Durga Das Basu : Introduction to the constitution of India, Lexis Nexis, Nagpur, 20th Edition 2008.
- Rai Kailash, (2009), The Constitutional law of India, Central law Publications, Allahabad.
- Tariq, Mohammad (2015) Ph. D. Thesis, "A Jurisprudential study of Labour Welfare and Dr. Ambedkar's Vision in the 21stCentury"
- Works Cited : *Essays on Untouchables and Untouchability* by Dr. B. R. Ambedkar *And Annihilation of Caste* by. Dr. B. R Ambedkar.
- Indian Journal of Lifelong Learning And Development Vol. 6; No. 4 October – December, 2018 Savitribai Phule Pune University, Ganeshkhind, Pune,